समसामयिक सन्दर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की
शिक्षा संकाय में पी-एच. डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध सारांश

शोध निर्देशक
डॉ. राघवेन्द्र कुमार हुरमाड़े
असिस्टेंट प्रोफेसर
मो. नं.-9926606376

शोधार्थी
सुशील कुमार
मो. नं.-7906398891

शिक्षा अध्ययनशाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म. प्र.)

(नैक द्वारा "A+" ग्रेड प्राप्त)

फरवरी, 2024

शोध सारांश

1.1.0 प्रस्तावना :

शिक्षा मानव समाज की ऐसी स्वाभाविक विशेषता है, जो सभ्यता और समाज के विकास के प्रत्येक युग में संस्कृति को संरक्षित एवं संवर्धित करने में सहायता देती आयी है। मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करने वाली शिक्षा का विकास स्वयं कभी बाधित नहीं हुआ है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में शिक्षा के प्रति जितनी रुचि जागृत हुई है, उतनी इससे पूर्व कभी नहीं रही। वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षा के लिये संस्कृति को संरक्षित करने के साथ नव संस्कृति का सृजन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। वस्तुतः शिक्षा अभी तक समकालीन समाज और संस्कृति को उसी रूप में जीवित रख कर सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखती थी। किन्तु वर्तमान में शिक्षा का लक्ष्य बालकों को उस विश्व के लिए शिक्षित करना है जो बदलते परिवेश के साथ अपने जटिल रूप में अनेक समस्याओं को लिए है। अतः शिक्षाशास्त्रियों का वर्तमान में यह दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को जटिल प्रतिस्पर्धात्मक समाज के लिए तैयार करें।

आधुनिक काल में भारत में ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली की नींव चार्ल्स ग्रांट और लार्ड मैकाले द्वारा उस समय की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर यूरोपीय साहित्य और विज्ञान को प्रसारित करने के लिए स्थापित की गई थी। सन् 1837 में मैकाले ने लिखा है "हमें भारत देश में इस प्रकार की श्रेणी पैदा करने का भरसक प्रयास करना चाहिए जो भारतियों को खून और रंग की दृष्टि से तो

हिंदुस्तानी बनाने का काम करे किन्तु रुचि, भाषा एवं विचारों की दृष्टि से अंग्रेज बनाये।”

प्रचलित शिक्षा द्वारा हम भारतीयों ने केवल बौद्धिकता के स्तर से यूरोप और अमेरिका का अन्धानुकरण किया है जो हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने-बाने के लिए कदापि उचित नहीं रहा, जिसका परिणाम यह रहा कि वर्तमान समय में हम ऐसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं जिसका समाधान कहीं न कहीं जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में छिपा हुआ है।

जे० कृष्णमूर्ति कहते हैं कि "जब मन मैं के विचार से परे चला जाता है, अनुभवकर्ता से, अवलोकनकर्ता से, विचारकर्ता से परे चला जाता है तब उस आनंद की सम्भावना होती है जिसे विकार छू तक नहीं सकता।" वर्तमान में प्रत्येक समाज में मनुष्य की मूलभूत एवं मनोशारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना केवल राज्य एवं समाज का कर्त्तव्य बनकर रह गया है। परन्तु मानव बुद्धि, विवेक एवं आत्मानुभूति उत्पन्न करना, स्व-कर्त्तव्य के साथ-साथ समाज की जिम्मेदारी भी है। किन्तु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में उपर्युक्त कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी का भाव कहीं गुम हो गया है। जिसके कारण शिक्षा में गुणात्मक सुधार के स्थान पर मानव मूल्यों का ह्रास हुआ है। ऐसी कठिन स्थितियों में जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन ही मनुष्य में सृजनात्मक प्रज्ञा एवं आत्मानुभूति के बोध द्वारा ही समाज में उत्पन्न हो रही चुनौतियों का सामना करके मानव जीवन को उद्देश्यपूर्ण बना सकता है। ऐसे उद्देश्यपूर्ण व्यक्ति

द्वारा ही एक सभ्य और उन्नत समाज का निर्माण जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन से ही सम्भव है।

1.1.0 जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन :

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार दर्शन और जीवन में कोई अन्तर नहीं होने के कारण शिक्षा और दर्शन एक दूसरे के अत्यधिक समीप आ जाते हैं एवं मानव जीवन को परिष्कृत कर उन्नत बनाते हैं। समाज को विकसित एवं प्रगतिशील बनाने हेतु प्रत्येक दार्शनिक कुछ न कुछ योगदान अवश्य देता है। वह मानव जीवन को प्रगतिशील एवं अधोमुखी बनाने हेतु कुछ सिद्धान्त निर्धारित करता है। व्यक्ति एवं समाज की प्रगति तभी सम्भव हो सकती है, जब प्रत्येक मनुष्य इन दार्शनिक सिद्धांतों को अपने व्यवहार में सम्मिलित करें। वास्तव में शिक्षा दर्शन ही इन दार्शनिक सिद्धान्तों को मानव जीवन में सार्थक एवं व्यावहारिक रूप प्रदान करता है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन मानव जीवन के सर्वांगीण विकास, अंतर्बोध, विवेक एवं प्रेम को महत्व देने के साथ ही उन्हें जागृत भी करता है। उनका शैक्षिक दर्शन मानव को उसके सत्य स्वरूप का ज्ञान कराता है। कृष्णमूर्ति जी के अनुसार -“आत्मज्ञान अथवा आत्मबोध होना ही दर्शन का सच्चा अर्थ है।” उनकी दृष्टि सामाजिक, सांस्कृतिक परम्पराओं को दरकिनार कर मानव जीवन के वस्तुपरक तथ्यों का प्रत्यक्ष बोध कराने में सहायक है। बाह्य प्रामाणिकता का सदैव विरोध करने वाले जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का बोध करना मानव जीवन को सुखमय बनाने हेतु एक अनिवार्य विशेषता है। जे कृष्णमूर्ति समय समय पर दिए गए अपने व्याख्यानों,

साहित्य एवं लेखन में पराम्परागत शब्दावलियों एवं भाषा का प्रयोग करने से बचते रहे हैं। जे. कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन धार्मिक परम्पराओं, पंथ, सम्प्रदायों एवं गुरुजनों का निषेध करते हुए मानव जीवन की कसौटी पर खरा उतरता है। **जे**. कृष्णमूर्ति मानते थे कि सत्य के साक्षात्कार हेतु किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि सत्य तो मानव के अंतर्मन का स्थाई घटक है।

1. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यमान समस्याएं एवं चुनौतियाँ :

विश्व के सभी देशों द्वारा उनके देश में शिक्षा संबंधी समस्याओं को दूर करने व शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने हेतु अनेक प्रयास किए जाने के बावजूद सभी देशों में शिक्षा संबंधी कुछ समस्याएँ व चुनौतियाँ रहती ही हैं। भारत में भी शिक्षा शिक्षा संबंधी कुछ समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं, विशेषकर विद्यालयीन शिक्षा के संदर्भ में। **नीति आयोग** के **स्कूली शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक 2016-17** के अनुसार देश भर में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में बड़ा भारी अंतर दृष्टिगत होता है। इसमें जहाँ केरल शीर्ष स्थान पर है, वहीं उत्तर प्रदेश अंतिम पायदान पर बना हुआ है। **राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 2017-18** के अनुसार **15% ग्रामीण परिवार एवं 42% शहरी परिवारों** के पास ही **इंटरनेट** की सुविधा है। जिसका अर्थ यह है कि समकालीन पाठ्यचर्या विज्ञान और तकनीकी के जटिल समाज में अनुपयोगी और अव्यवहारिक है।

नीति आयोग का **इंडिया नॉलेज हब** और **शिक्षा मंत्रालय** का **दीक्षा तथा शगुन प्लेटफार्म** शिक्षा को सुविधाजनक बनाने की दिशा में एक कदम है। **UDISE+ 2019-20** रिपोर्ट के अनुसार भारत में अभी भी 2,00,000 से अधिक स्कूलों में पुस्तकालय,

11,00,000 से अधिक स्कूलों में इंटरनेट एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। 6465 से अधिक स्कूलों के पास इमारत और 23% स्कूलों के पास बिजली कनेक्शन का अभाव है। लैंगिक समानता से सम्बंधित मुद्दे अभी भी अनसुलझे हैं। **ग्लोबल जेंडर गेप रिपोर्ट 2023 संस्करण** में भारत ने अति महत्वपूर्ण सुधार किया है, किन्तु अभी भी हमारी स्थिति **146** देशों में **127** वें क्रम पर है। उच्च शिक्षा पर **अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2020-21** के अनुसार भारत में अभी भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अन्य कई देशों की तुलना में महंगी है। जिस कारण आम विद्यार्थी उच्च शिक्षा से अभी भी दूर है। **क्वाक्वेरेली साइमंड्स विश्व रैंकिंग 2024** में **45** विश्वविद्यालयों की रैंकिंग के साथ भारत विश्व स्तर पर **सातवाँ** सबसे अधिक प्रतिनिधित्व वाला देश है, लेकिन कोई भी भारतीय विश्वविद्यालय वैश्विक स्तर पर प्रथम सौ विश्वविद्यालयों में स्थान हासिल करने में असमर्थ रहा है। हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करने तक सीमित रखा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करे। **टी. एस. आर. सुब्रमण्यम समिति** ने मई **2016** को प्रस्तुत अपनी एक रिपोर्ट में माना कि शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लिए विद्यालयों में सामुदायिक भागीदारी की महती आवश्यकता है।

सी. आई. आई. डेलॉइट रिपोर्ट **2021-22** बताती है कि बेहतर बुनियादी सुविधाओं ने भी स्कूली शिक्षा में उच्च ड्रॉपआउट दर को कम नहीं किया है, जिससे

पता चलता है कि शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण को बेहतर बनाये जाने आवश्यकता है। **RTE 2009** और अन्य संवैधानिक प्रावधानों के बाद भी समाज में व्यापक पैमाने पर निरक्षरता व्याप्त है। **25%** भारतीय अभी भी शैक्षिक रूप से निरक्षर हैं। **साक्षरता 2011** के आंकड़े बताते हैं कि पुरुषों में साक्षरता दर **82.14%** एवं महिलाओं में **65.46%** है। पुरुषों एवं महिलाओं की साक्षरता में **17%** का अन्तर लैंगिक असमानता को भी इंगित करता है। भारत में साक्षरता दर **74.04 %** विश्व साक्षरता दर **84%** से भी कम है।

शिक्षा पर अनेक कार्यक्रम चलाये जाने के बावजूद शिक्षा की वर्तमान स्थिति उचित अवसंरचना का अभाव, शिक्षा पर **GDP** का **3.5%** से कम खर्च, छात्र शिक्षक अनुपात में विषमता, उच्च ड्रापआउट दर, निरक्षरता, शिक्षा के माध्यम की समस्या, तकनीकी व व्यावसायिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव, शिक्षा में लैंगिक असमानता आदि समस्याओं का सामना कर रही है। उपर्युक्त समस्याओं का उचित समाधान खोजने एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली को विश्वस्तरीय बनाने के लिए जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन पर आधारित उत्तरदायी और प्रासंगिक विचारों को लेकर शोध अध्ययन किये जाने के नितांत आवश्यकता है।

1.2.0 शोध अध्ययन का औचित्य :

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन एक नवीन आयाम स्थापित करते हुए मानव परिष्कार की आशा करता है। जे० कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन प्रचलित शिक्षा के स्वरुप एवं संरचना के विपरित मनुष्य में एक ऐसी अंतर्दृष्टि को उत्पन्न करता है जो एक

नव सभ्यता एवं सृजनात्मक समाज का निर्माण कर सकता है। जिद्दू कृष्णमूर्ति कहते हैं कि "इल्म का मसला कहीं अधिक व्यापक है। इसका काम इतना ही नहीं है कि दुनिया में यह आपको कोई नौकरी दिलाने में सहायक हो बल्कि यह भी है कि इस दुनिया का सामना करने में आपकी सहायता करे।" वर्तमान शिक्षा अपने उद्देश्यों एवं कार्य प्रणाली में आशानुरूप सफल ना होने के कारण अपने कई बिन्दुओं पर अनेक प्रश्न चिन्ह उत्पन्न करती है। फलस्वरूप वर्तमान समाज शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाया। ऐसे में जे० कृष्णमूर्ति की शैक्षिक धारणाओं को कार्यान्वित करके ही समाज को एक नवीन दिशा एवं आयाम प्रदान किया जा सकता है, जिससे उत्पन्न हो रही व्यक्तिगत, शैक्षिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में कृष्णमूर्ति जी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन करके समसामयिक सन्दर्भ में उनके विचारों की उपादेयता को वर्तमान समय की कसौटी पर कसने का प्रयास किया गया है।

वैश्विक पटल पर देखा जाये तो अन्य शिक्षाशास्त्रियों एवं दर्शनशास्त्रियों से भिन्न जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन, जीवन जीने एवं उससे सीखने की एक संयुक्त प्रक्रिया है। जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षा केवल रोजगार और जीविकोपार्जन मात्र का ही साधन नहीं है अपितु मानव जीवन में आने वाली चुनौतियों और समस्याओं का सामना व उनका समाधान करने की एक योग्यता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुछ सुधार हो सके एवं देश को सुसंस्कारित नागरिक मिल सकें इसलिए प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन

का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। शिक्षा की अवधारणा को साकार रूप प्रदान करने एवं विद्यार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार आवश्यक है, जिसको जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन में निहित तत्वों के प्रयोग द्वारा ही क्रियान्वित किया जा सकता है। जे. कृष्णमूर्ति शिक्षा के सन्दर्भ में कहते हैं कि "शिक्षा का मतलब कुछ परीक्षाएं पास कर लेना भर नहीं बल्कि इन समस्त समस्याओं पर विचार करने के लायक होना भी है। ताकि आपका मन यांत्रिक और परंपराबद्ध न हो जाए, ताकि आपका मन सृजनशील हो, ताकि आप समाज के अनुकूल होने में ही न लगे रहें बल्कि उसे तोड़कर पूर्णतः नये का सृजन करें। क्योंकि शिक्षा का तात्पर्य आखिरकार यही तो है कि आप स्वतंत्रतापूर्वक, बेरोकटोक विकसित हो सकें ताकि एक अभिनव विश्व का सृजन संभव हो।"

समसामयिक सन्दर्भों में भारतीय शिक्षा प्रणाली में अवसर एवं संभावनाओं पर विमर्श किया जाये तो यह स्पष्ट हो जाता है कि परिवर्तित होते समाज में हमारी शिक्षा प्रणाली किसी अन्य देश की शिक्षा प्रणाली से कमतर नहीं है। अनेक शोधों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि संसार में अधिगम की दृष्टि से भारतीय विद्यार्थी किसी भी अन्य देश से पीछे नहीं हैं। अमेरिका में भारतीय अमेरिकी सर्वाधिक शिक्षित समुदाय है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बाद 34 साल बाद NEP 2020 की घोषणा की गयी। प्रत्येक सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्र-छात्राओं को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा बिना किसी भेदभाव के मिल सके ऐसी कल्पना NEP 2020 में की गयी है। वस्तुतः शिक्षा की योजना बनाने एवं

उसे वास्तविक रूप में लागू करने के लिए शिक्षा की समसामयिक स्थिति का अध्ययन करना शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध हेतु जरूरी समझा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार करके ही देश के समावेशी विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश ने सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य कई क्षेत्रों में व्यापक सुधार किया है। जिससे देश की विकास दर में बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है। बढ़ती विकास दर ने शैक्षिक क्षेत्र को भी सकारात्मक रूप से प्रभाविक किया है। सरकार ने भी शिक्षा की व्यापकता और गुणवत्ता में वृद्धि करने हेतु सर्वशिक्षा अभियान, मध्याहन भोजन योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, पी० एम० श्री स्कूल आदि योजनाएं चलायी जा रही हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद विविधताओं में एकता वाला हमारे देश का शिक्षा क्षेत्र अनेक समस्याओं और चुनौतियों का सामना कर रहा है। वर्तमान में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यार्थी केंद्रित एक ऐसी नयी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो पठन-पाठन की पुरानी व्यवस्था को बदलकर विद्यार्थियों में रचनात्मक क्षमता का विकास कर सामाजिक उन्नति में योगदान दे सके। सरकार द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में अवसरों की समानता सुनिश्चित करने के बावजूद महिला और पुरुष साक्षरता दर में लगभग **17%** का अन्तर है।

नीति आयोग के स्कूली शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक 2019 के अनुसार देश भर में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में भारी अंतर व्याप्त है। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली में अनेक सकारात्मक विषयों के होते हुए भी अनेक समस्याएं एवं चुनौतियां विद्यमान हैं। इन समस्याओं एवं चुनौतियों के समाधान हेतु भारतीय

शिक्षाशास्त्रीयों, विद्वानों एवं दार्शनिकों के विचारों को अपनाये जाने की आवश्यकता है जिससे ऐसी शैक्षिक नीतियों का निर्माण हो सके जो समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप मनुष्य का व्यक्तिगत विकास कर सके। इन्हीं प्रमुख भारतीय शिक्षाशास्त्रियों में एक नाम जे. कृष्णमूर्ति जी का है। शोधार्थी द्वारा जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के विश्लेषणात्मक अध्ययन को लेकर शोध किये जाने का यही कारण रहा है जिससे भारत विश्वगुरु के पटल पर पुनः स्थापित हो सके।

सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता शिक्षक को ही सम्पूर्ण समाज ने यह पुनीत कार्य सौंपा है कि वह मानवीय जीवन के समक्ष उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करना, समझना और उनका हल खोजना सिखाये। जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन विद्यार्थियों को उपरोक्त चुनौतियों के सन्दर्भ तैयार करने में सहायक हो सकता है। इसलिए शोधकर्ता ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन और अवलोकन किया है। श्रृंगी (1973),गोलकिया (1982), अभ्यंकर (1982), गोयनका (1990), रॉय (1993), विश्वकर्मा (1995), सिन्हा (2002), मिश्रा (2012), शोरीलू (2012), अनबनाथन (2013), निर्मल (2016), तिवारी एवं भारद्वाज (2019), इस्लाम (2021), गुप्ता (2022) ने जे० कृष्णमूर्ति के दर्शन सम्बन्धी विचारों पर शोध अध्ययन किये। सिंह (1977), क्यूरी एण्ड ब्रेडमोर (1983), दास (1990), वर्गीज (1998), गुप्ता (2006), शर्मा (2008), रेड्डी (2015), कुमार एवं श्रीवास्तव (2016), मल्होत्रा (2016) आदि ने जिद्द् कृष्णमूर्ति और अन्य दार्शनिकों के विचारों के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित शोधकार्य किये। कुमारी (1982),

रामास्वामी (1983), व्यास (1986), हण्टर (1988), सैनी (1992), मेनिजिस (1996), पांडे (2005), सरमाहा (2013), सिंह (2015), दाश्टी एवं मेहरपोर (2017), गुप्ता एवं अरोरा (2022) आदि ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के आलोचनात्मक मूल्यांकन से सम्बन्धित शोधकार्य किये। थापन (1991), पिटरसन (2000), पटेल (2003) आदि ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के विद्यालय संबंधी सम्प्रत्यय से सम्बन्धित शोधकार्य किये। खरे (1985), इन्गल्स (1994), सोसा (2012), नागराज (2016) आदि ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के मस्तिष्क (चेतना) से सम्बन्धित शोधकार्य किये। जोसेफ (1975), तिवारी (1989), गोस्वामी (1992), पेजेन्सकी (1993), श्रीवास्तव (2005), पाण्डे (2006), सिंह एवं यादव (2010), सिंह (2011), सिंह (2012), साहा (2016), सिंह (2020) आदि ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता से सम्बन्धित शोधकार्य किये। वर्तमान के भौतिकतावादी, वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक परिवेश से प्रभावित मानव को उचित दिशाबोध कराने वाले जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन पर विचार करते हुए शोधकर्ता पाता है कि उनका शिक्षा दर्शन वर्तमान शैक्षिक परिवेश को पर्याप्त रूप से प्रभावित करता है, जो निरन्तर शोध का विषय रहा है। अतः उपरोक्त समस्त कारणों से 'समसामयिक सन्दर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन' करने की आवश्यकता प्रतिपादित हुई।

1.3.0 समस्या कथन :

प्रस्तुत शोध की समस्या निम्न है-

समसामयिक सन्दर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1.4.0 अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न थे-

1. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा की अवधारणा का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा के उद्देश्यों का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित पाठ्यक्रम का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
4. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षण विधियों का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
5. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित विद्यालयी संकल्पना का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
6. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षक, शिक्षार्थी एवं उनके संबंधों का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

7. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित अनुशासन का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
8. जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित मूल्यांकन का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

1.5.0 तकनीकी शब्द की परिभाषा :

प्रस्तुत शोध समस्या में प्रयुक्त तकनीकी शब्द 'समसामयिक सन्दर्भ' को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है-

"शोधकर्ता की शोध समस्या से संबन्धित वे क्षेत्र जो वर्तमान शिक्षा को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे हैं या प्रभावित हो रहे हैं, प्रस्तुत शोध में समसामयिक सन्दर्भ है।"

1.6.0 शोध का परिसीमन :

प्रस्तुत शोध की परिसीमाएं निम्न थीं-

1. प्रस्तुत शोध में जिद्दू कृष्णमूर्ति के जीवन दर्शन एवं शैक्षिक दर्शन को ही सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन भारतीय समसामयिक सन्दर्भ में किया गया है।

1.7.0 शोध का प्रकार :

प्रस्तुत शोध दार्शनिक प्रकार का शोध है।

1.8.0 अध्ययन सामग्री के स्रोत :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों के लिए उनके जीवन दर्शन एवं शैक्षिक दर्शन से संबन्धित साहित्य तथा समसामयिक संदर्भों के लिए शिक्षा संबंधी नीतियों व विभिन्न आयोगों व समितियों के प्रतिवेदनों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व शोधों का अध्ययन किया गया।

इनमें शोधार्थी द्वारा प्रमुख रूप से कृष्णमूर्ति द्वारा लिखी गई **31** निम्न पुस्तकों को सम्मिलित किया गया था जो हिन्दी भाषा में अनूदित थी - मन क्या है?, ध्यान, प्रेम क्या है?, सत्य और यथार्थ, जीवन और मुक्ति, ये रिश्ते क्या हैं?, ज्ञात से मुक्ति, हिंसा से परे, गरुड़ की उड़ान, प्रथम एवं अंतिम मुक्ति, आमूल क्रांति की आवश्यकता, वाशिंगटन वार्ताएं, अंतिम वार्ताएं, सत्य एक पथहीन भूमि है, जीवन की पुस्तक, ध्यान में मन, विज्ञान और सृजनशीलता, तरिक प्रस्फुटन, स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन, सुखी वही जो कुछ नहीं है, जिद्दू कृष्णमूर्ति : जीवन और दर्शन, आजादी की खोज, ईश्वर क्या है?, आपको अपने जीवन में क्या करना है?, शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, शिक्षा संवाद, स्कूलों को पत्र भाग - 1, स्कूलों को पत्र भाग - 2, संस्कृति का प्रश्न, शिक्षा क्या है?, तथा परम्परा जिसने अपनी आत्मा खो दी।

1.9.0 प्रदत्त विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्यों पर आधारित कृष्णमूर्ति के साहित्य व शिक्षा से संबन्धित समसामयिक जानकारी का संकलन किया गया। विभिन्न स्त्रोतों से संकलित जानकारी का विश्लेषण, विषयवस्तु

विश्लेषण द्वारा किया गया। विषयवस्तु-विश्लेषण शोधार्थी द्वारा निम्न पदों के अंतर्गत किया गया-

1. अध्ययन के स्त्रोतों व इकाइयों का चयन
2. तथ्यों का संकलन
3. तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या
4. तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर परिणाम व निष्कर्ष

1. अध्ययन के स्त्रोतों व इकाइयों का चयन-

प्रस्तुत चरण में शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कृष्णमूर्ति के जीवन दर्शन व शिक्षा दर्शन से संबन्धित विचारों का अध्ययन करने हेतु विभिन्न पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, वेबसाइट्स व यू-ट्यूब का स्त्रोत के रूप में उपयोग कर अध्ययन किया गया व इनमें से लेख, भाषण, उपन्यास, चर्चा, वार्ता, रचनाओं एवं अन्य कार्यक्रमों से संबन्धित साहित्य की सूची बनाई गई। इनमें से शोधार्थी द्वारा मुख्य रूप से मूल स्त्रोतों से रूप में जिद्दू कृष्णमूर्ति की 31 पुस्तकों की सूची तैयार की, जिनका उसे विषयवस्तु विश्लेषण करना था। चयनित स्त्रोतों का अध्ययन कर, इनकी विभिन्न इकाइयों में से शोध हेतु प्रासंगिक इकाइयों का चयन किया गया।

2. तथ्यों का संकलन -

विश्लेषण के इस चरण में शोधार्थी द्वारा जिद्दू कृष्णमूर्ति से सम्बंधित चयनित साहित्य/पुस्तकों में वर्णित लेख, भाषण, उपन्यास, चर्चा, वार्ता, रचनाओं एवं अन्य कार्यक्रमों से संबन्धित विषयवस्तु का अध्ययन किया गया व तथ्यों के संकलन हेतु शोध के उद्देश्यों में दिये गए पदों से संबन्धित आवश्यक अनुच्छेदों, प्रसंगों, वाक्यों व

शब्दों की सूची तैयार की गई एवं शोध निर्देशक व अन्य विद्वानों की सहायता उद्देश्यों के अनुरूप तथ्यों का वर्गीकरण किया गया। पर शोधकर्ता द्वारा अपने शोध निर्देशक व अन्य विद्वानों की सहायता से इनमे से उचित सूचियों एवं इकाइयों का चयन किया।

3. तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

तथ्यों के संकलन के पश्चात विषयवस्तु विश्लेषण के इस चरण में शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्यों में दिये गए पदों के आधार पर शिक्षा संबंधी चयनित अनुच्छेदों, प्रसंगों, वाक्यों व शब्दों का विश्लेषण कर तार्किक रूप से समसामयिक संदर्भों में व्याख्या की गई। शोधार्थी द्वारा इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि यह व्याख्या वस्तुनिष्ठ एवं क्रमबद्ध हो। इस हेतु शोधार्थी द्वारा यूट्यूब में दिये गए वीडियो का अध्ययन कर उनकी सहायता भी ली गई। इस प्रकार जिददु कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का समसामयिक संदर्भों में विवरण तैयार किया गया।

4. तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर परिणाम व निष्कर्ष-

इस पद में शोधार्थी द्वारा उपरोक्त विश्लेषणात्मक व्याख्या के आधार पर परिणाम प्राप्त किए गए व समसामयिक संदर्भों को दृष्टिगत रखते हुये, परिणामों पर तार्किक चिंतन करते हुये सार रूप में प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष प्राप्त किए गए।

1.10.0 शोध के निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर प्राप्त निष्कर्ष उद्देश्यानुसार नीचे प्रस्तुत किए गए हैं-

शोध का प्रथम उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा की अवधारणा का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना'।

प्रथम उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जो सत्यता, सादगी, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता, ईमानदारी आदि मानवीय मूल्यों पर आधारित हो, जिससे सम्पूर्ण समाज लिंग, जाति, भाषा, क्षेत्र, रंग, धर्म, सम्प्रदाय आदि के आधार पर विभाजित होते हुए भी माला के मोतियों की भाँति एक साथ संयुक्त हो। इसी दार्शनिक विचार के आधार पर उन्होंने शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट किया है - इनके अनुसार शिक्षा वह है, जो आपको इस दुनिया का सामना करना सीखाये। "शिक्षा का कार्य बचपन से ही जीवन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझने में सहायता करना है। शिक्षा का उपयोग केवल नौकरी पाने और व्यवसाय करने तक नहीं है"। आज इस संसार में हर व्यक्ति अच्छे से अच्छा रोजगार पाने के लिए तथा अधिक से अधिक ऊपर उठने के लिए प्रयत्न कर रहा है, यदि कोई व्यक्ति क्लर्क है और ऊँचा पद प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है। इसलिए वह हर समय संघर्षरत रहता है। इस प्रकार का संघर्ष अनवरत चलता रहता है। "अतः शिक्षा ऐसी हो जो जीवन की हर समस्याओं का सामना करने के लिए समर्थ बनाए। यह आवश्यक है कि इन सभी समस्याओं का उचित रूप में सामना करने के लिए शिक्षित किया जाए। यही शिक्षा है न कि मात्र कुछ परीक्षाएँ पास कर लेना, कुछ बेहुदा विषयों का जिनमें आपकी रुचि बिल्कुल नहीं है, उसका अध्ययन कर लेना।"

समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षा की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार- 'शिक्षा को पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत रूप से आवश्यक बताया गया है। इस हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वियज्ञानिक उन्नयन, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी माना गया है, जो कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा की अवधारणा से पूर्ण होता प्रतीत होता है क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा सम्बन्धी विचार उनके दार्शनिक विचारों से अभिप्रेरित है। इनका दर्शन मनुष्य के मूल्यों और कर्तव्यों पर बल देता है। मानवता तथा प्रकृति के प्रति प्रेम ही इनके जीवन दर्शन का सार है।

- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने शिक्षा को मात्र जीविकोपार्जन का साधन न मानकर आत्मज्ञान एवं स्वयं को पहचानने पर अधिक बल दिया क्योंकि स्व-ज्ञान से ही मानवीय जीवन के मूल्यों का बोध होता है, जो सुख एवं शान्ति से जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने अपने शिक्षा दर्शन में भय को कोई स्थान नहीं दिया है। इस आधार पर प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा के स्थान पर बालकों को जीवन की शिक्षा देने के वह प्रबल समर्थक थे ताकि विद्यार्थी किसी भी प्रकार के भय से मुक्त हो सके।

➢ जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा वही है जो विद्यार्थी को उसके जीवन में आने वाली चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करने में मदद करें, ताकि वह जीवन को समझ सके, उससे हार न मान ले, उसके बोझ से दब ना जाए बल्कि इस दबाव को समझाने के योग्य होकर अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सके।

शोध का द्वितीय उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा के उद्देश्यों का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।'

द्वितीय उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति अपने शैक्षिक दर्शन में शिक्षा का मूल उद्देश्य एक ऐसे संतुलित मानव का विकास करना है जो चेतनायुक्त, सद्भावना से परिपूर्ण, सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त, वैज्ञानिक बुद्धि एवं आध्यात्मिकता में समन्वय स्थापित करने वाला हो। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य बालक में प्रेम की भावना का विकास कर संवेदनशीलता का संचार करने वाला होना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जो बालक में भय, प्रतियोगिता और स्पर्धा से मुक्त हो ताकि समाज में शांति स्थापना की तरफ कदम बढ़ाया जा सके। इस प्रकार जिद्दू कृष्णमूर्ति शिक्षा के उद्देश्यों के विषय में कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति और समाज के बीच उचित संबंधों को स्थापित करना है। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा के उद्देश्य निम्न है- एकीकृत मानव का निर्माण शांति हेतु करना, व्यक्ति तथा समाज के बीच उचित संबंधों की स्थापना करना, व्यक्ति की स्वंय के प्रति समझ विकसित करना,

नवीन समाज और मस्तिष्क का निर्माण करना, जागरूकता एवं विचारशीलता की भावना का विकास करना।

समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षा के उद्देश्यों की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि वर्तमान समय में ज्ञान के विस्फोट को एवं पूरे विश्व में तेजी से होने वाले परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु लागू की गयी। जिद्दू कृष्णमूर्ति के वैयक्तिक उद्देश्यों के अन्तर्गत व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, आत्मिक विकास कर उसके व्यक्तित्व के सभी पक्षों का सन्तुलित विकास सुनिश्चित करने का प्रयास सम्मिलित है। शिक्षा के उद्देश्यों को इन्हीं भावों NEP 2020 में भी वर्णित किया गया है। NCF 2005 एवं NEP 2020 में भी शिक्षा का उद्देश्य वर्तमान की आवश्यकतानुरूप विद्यार्थी में विभिन्न गुणों का विकास कर उसे संवेदनशील, विवेकशील, मानव कल्याण के लिए तैयार करना है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता है, क्योंकि -

- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य ऐसे समाकलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है, जो जीवन का सामना समग्रता से करने में सक्षम हो। उनका मानना था कि स्व में तथा दूसरों में भी बुद्धिमत्ता को जागृत करना ही शिक्षा है।

- कृष्णमूर्ति के अनुसार स्वयं के सम्बन्ध के बारे में ज्ञान और स्वयं के सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में जागरूकता शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास के साथ नैतिक, संवेगात्मक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास तथा व्यावसायिक कुशलता से बालक को आत्मनिर्भर बनाना मानते हैं।

शोध का तृतीय उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित **पाठ्यक्रम** का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना' ।

तृतीय उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे व्यक्ति के स्व का विकास हो सके। उनका मानना था कि वर्तमान शिक्षा न केवल विद्यार्थी को पाठ्यक्रम से अलग कर रही है। बल्कि यह विद्यार्थियों को उपलब्ध पाठ्यक्रम से समझौता करने पर मजबूर कर रही है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आदर्श एवं अपेक्षित ज्ञान, कौशल तथा मूल्य बच्चे से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गये हैं। वर्तमान पाठ्यक्रम में क्या है? के स्थान पर क्या होना चाहिए? महत्वपूर्ण हो गया है जो कि व्यक्तिगत रूप से जटिलता लिए हुए है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार वर्तमान पाठ्यक्रम पारम्परिक प्रकार का एक पाठ्यक्रम है जो कि जटिल रूप से संरचित, संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह पर आधारित, तथाकथित विषय केन्द्रित, इकाइयों पर आधारित या कुछ समस्याओं पर आधारित है जो कि संरचित पाठ्यक्रम का भ्रम देता है लेकिन जोकि मुख्य रूप से

संज्ञानात्मकता लिए हुए है। उपरोक्त रूप से निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति वर्तमान पाठ्यक्रम को केवल ज्ञानात्मक विकास करने वाला मानते हैं, जिससे विद्यार्थी का केवल ज्ञानात्मक पक्ष ही मजबूत हो पाता है।

उनके अनुसार विभिन्न विषयों का शिक्षण तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि छात्रों को पहल करने के प्रति जागरूकता ना हो यानि वह विद्यार्थी को जागरूक देखना चाहते थे, वे विद्यार्थी में सीखने की इच्छा का भाव चाहते थे क्योंकि उनका यह मानना था कि जब तक विद्यार्थी स्वयं सीखने के लिए तत्पर नहीं होगा तब तक अध्यापक चाहे कितने ही विषयों को पढ़ा ले वह विद्यार्थी वास्तविकता, सत्य का दर्शन कभी नहीं कर पायेगा। उनका मानना था कि विभिन्न विषय जरूरी है लेकिन वह पर्याप्त नहीं है। शोधकर्ता ने कृष्णमूर्ति के विचारों में अप्रत्यक्ष रूप से पाया कि पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो सभी व्यक्तियों के लिए लाभदायक हो इसलिए उन्होंने सन्तुलित पाठ्यक्रम पर बल दिया क्योंकि वे बालक के सन्तुलित विकास की बात करते थे।

कृष्णमूर्ति ने पाठयक्रम को एकीकृत करने पर जोर दिया एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी एक एकीकृत या क्रॉस-करिकुलर शैक्षिक दृष्टिकोण की बात करती है। कृष्णमूर्ति प्रकृति को बहुत महत्व देते हैं, जिसका हम सभी हिस्सा हैं। उन्होंने प्रकृति, पक्षियों, जानवरों, सरीसृपों, कीड़ों आदि के संरक्षण और प्रकृति के प्रति संवेदनशील और सम्मानपूर्ण होने के लिए प्रकृति के साथ समय बिताने की वकालत की। अब नीति निर्माताओं ने भी इसके महत्व को महसूस किया और "ऑर्गेनिक लिविंग और पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने और पर्यावरण के लिए सम्मान" विकसित करने

का सुझाव भी दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी छात्रों को सम्रग एवं बहुविषयक शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान रखा गया है ताकि छात्रों का समग्र विकास किया जा सके। जिसके लिए लचीले पाठयक्रमों को विकसित किये जाने की वकालत की गयी। साथ ही बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प प्रदान किया जाएगा। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी जिद्दू कृष्णमूर्ति के पाठयक्रम संबंधी विचारों को अपनाने के लिए पूर्णत प्रयासरत है। निष्कर्ष रूप में समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित पाठ्यक्रम की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में ऐसे पाठ्यक्रम निर्माण पर बल देते हैं जो बालकों की आवश्यकता और रुचि के अनुकूल हो। उन्होंने पाठ्यक्रम में भाषा, साहित्य, गणित, मूर्तिकला, वास्तुकला और गृह विज्ञान आदि विषयों को प्रमुख स्थान देने की बात कही है। क्योंकि इन विषयों की शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के दैनिक जीवन हेतु उपयोगी है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास का समन्वय स्थापित करने पर बल देते हैं। जिससे बालक का जीवन के सभी क्षेत्रों में सन्तुलित विकास हो सकें।

शोध का चतुर्थ उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षण विधियों का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना' ।

चतुर्थ उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति का यह मानना था कि सजगता, ध्यान और अवधान आदि में शुद्ध शाश्वत ऊर्जा है जो समस्त रचनाओं में अभिव्यक्त होती है और उन्हें पोषित करती है। एक अध्यापक ही अपने बच्चों की क्षमता, योग्यता को जानता है, इसलिए उसे स्वयं अपने दृष्टिकोण के आधार पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए विधि का निर्माण करना चाहिए। विभिन्न शिक्षण विधियों का ज्ञान अध्यापक को प्रभावशाली ही नहीं बनाता है, बल्कि यह अध्यापक की अपने विद्यार्थियों के प्रति स्नेह, धैर्य, प्यार की गुणवत्ता को बताता है। इसी के साथ कृष्णमूर्ति शिक्षण विधि में अनुसन्धान को अत्यधिक महत्व देते थे इसके लिए वह नयी-नयी वस्तुओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु शैक्षिक पर्यटन को महत्व देते थे।

इसी के साथ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आने से हर महीने के अनुसार एक अध्यापक को अपने पाठ्यक्रम को पूर्ण कराने का दबाव रहता है। कृष्णमूर्ति ने अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षक के व्यवहार, भाषण, भाषा, उच्चारण आदि विषय पर निपुणता, विषय की तैयारी, विभिन्न तरीकों और तकनीकों, बाल मनोविज्ञान, जैसे तथ्यों के सम्बन्ध में चर्चा अपने शैक्षिक दर्शन में की है, जो कि शिक्षण विधि को प्रभावी बनाने में काफी उपयोगी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी क्रिया द्वारा सीखकर विद्यार्थी के ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ने के सम्बन्ध में बात कही गयी है। कृष्णमूर्ति भी

अनुभवात्मक अधिगम पर जोर देते हैं क्योंकि व्यावहारिक सत्र बच्चों को गंभीर एवं रचनात्मक रूप से सोचने, पूछताछ करने, खोजने, चर्चा करने, बातचीत करने और समस्या का विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस संबंध में कृष्णमूर्ति के दृष्टिकोण को अपनाती है कि शिक्षण और सीखने को अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित किया जाएगा, प्रश्नों को प्रोत्साहित किया जाएगा एवं छात्रों के लिए अधिक गहन अनुभवात्मक अधिगम के लिए कक्षा सत्र नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे। अधिक मजेदार, रचनात्मक, सहयोगी और खोजपूर्ण गतिविधियाँ समय-समय पर आयोजित कराई जाएगी।

निष्कर्ष रूप में समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षण विधियों की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षण पद्धति ऐसी हो जो स्वतन्त्र, विचारशील एवं संवेदनशील व्यक्तित्व का निर्माण करने के साथ, सत्य की समझ विकसित करे तथा उच्च मानसिक स्वास्थ्य विकसित करने के लिए जीवन जीने की कला का विकास करें।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने प्राचीन और प्रचलित शिक्षक विधियों को न मानकर नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने की बात कही, क्योंकि उनका शिक्षण करने का तरीका मनोवैज्ञानिक रहा है। वे शिक्षा को भयरहित, दबाव रहित तथा संस्कार रहित मानते हैं।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति क्रिया करके सीखने, खोज विधि, अवलोकन एवं निरीक्षण विधि को अपनाने पर बल देते हैं।

शोध का पाँचवां उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित **विद्यालयी संकल्पना** का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना' ।

पाँचवें उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति ने विद्यालय की संरचना तथा विद्यालय के कार्य सम्बन्धी कुछ सुझाव भी दिए। उन्होंने सुझाव विस्तृत रूप में नहीं दिए लेकिन उनके दिए गये सुझाव समग्र दृष्टिकोण का उत्तम संकेत देते हैं। जिसे कृष्णमूर्ति द्वारा स्थापित सभी विद्यालयों में अपनाया भी गया है। वास्तविक स्थिति में भी देखा जाए तो इनके द्वारा स्थापित सभी विद्यालय प्रकृति की गोद में, शान्त वातावरण में स्थापित किए गए थे।

वर्तमान परिपेक्ष्य में यदि देखा जाए तो जिद्दू कृष्णमूर्ति द्वारा बताये गये विद्यालय वातावरण में बालकों की रुचि के अनुसार शिक्षण वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर पर लागू करना आवश्यक होगा क्योंकि पाठ्यक्रम को समय पर पूर्ण करवाना होता है तथा कक्षा में व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है। यदि अध्यापक हर बच्चे की रुचि के अनुरूप शिक्षण करवाये तो यह असम्भव होगा कि उस कक्षा के सम्बन्धित विषय को समय पर पूर्ण करवाया जा सके। परन्तु यह विचार छोटी कक्षाओं तथा बालवाड़ी में लागू किया जा सकता है तथा व्यावहारिक रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा किया जा भी रहा है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति ने भयमुक्त वातावरण की बात कही। आज हमारे पूरे भारत के सभी विद्यालयों में शारीरिक दण्ड पर प्रतिबन्ध इसलिए भी लगाया गया है ताकि विद्यार्थी बिना भय के अपने विचारों को अपने अध्यापक के सामने रख सके। इसी के साथ विद्यालय का वातावरण अध्यापक के लिए भी भयमुक्त होना चाहिए। किसी भी उच्च अधिकारी, प्रधानाचार्य जी का किसी भी प्रकार का कोई अनावश्यक दबाव नहीं होना चाहिए। अध्यापक को अपनी बात कहने की पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। जिद्दू कृष्णमूर्ति का यह विचार अच्छा सकारात्मक वातावरण निर्माण करने तथा अच्छे परिणाम को प्राप्त करने के साथ प्रतियोगिता, संघर्ष, वैमनस्य जैसी भावनाओं को समाप्त करने में सहायक होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रयास किया गया है कि विद्यालय का वातावरण केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने वाला न होकर जीविकोपार्जन की योग्यता विकसित करने वाला हो।

निष्कर्ष रूप में समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित विद्यालयी संकल्पना की यही उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए। विद्यालय में बच्चों को पूर्णरूप से शारीरिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्राप्त होनी चाहिए जिससे बच्चे निर्भय होकर अध्ययन कर सकें।

- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना को महत्व दिया है। उनके शैक्षिक विचार किसी व्यक्ति, जाति, समाज, सम्प्रदाय, राष्ट्र की सीमाओं की कैद नहीं रहें। उनके विचार सम्पूर्ण विश्व में शैक्षिक जगत के लिए अनुकरणीय हैं।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यालय को सामूहिक रुचि का केन्द्र होना चाहिए। जब आपस के विचार और कार्य टकराते है तो विरोध और भ्रान्ति उत्पन्न होती है, जिसको प्रेम और उत्साह के द्वारा ही दूर करके सहयोग का संवर्धन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने विद्यार्थी को विषय के सम्बन्ध में गहन जानकारी प्राप्त करने हेतु अन्य संसाधन उपलब्ध कराने की बात कहीं जो आज हमारे सभी विद्यालय के प्रबन्धकों द्वारा पूरा किए जाने का प्रयास किया भी किया जा रहा है। इसी के साथ पुस्तकालय की भी व्यवस्था अधिकांश विद्यालयों में की गयी है, लेकिन विद्यार्थी समयाभाव या जागरूकता की कमी के कारण पुस्तकालयों में इतना नहीं जा पाते हैं।

शोध का छटवां उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षक, शिक्षार्थी एवं उनके संबंधों का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना' ।

छटवें उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार अध्यापक को सही रूप में एकीकृत मानव होना चाहिए। इनकी दृष्टि से बालकों के साथ अध्यापक का व्यवहार प्रेमपूर्ण एवं धैर्यपूर्ण होना चाहिए। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार एक अध्यापक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। यदि अध्यापक अपने हृदय से सभी प्रकार के भय को तथा प्रभुत्व की सारी वासना को निकाल दे तो वह सृजनात्मक समझ और स्वतन्त्रता की ओर

बढ़ने में छात्र की सहायता कर सकता है। इसके साथ ही जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि अध्यापक को किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर उनका मार्गदर्शन नहीं करना चाहिए क्योंकि स्वयं के द्वारा निर्धारित या दूसरे के द्वारा आरोपित होने पर सृजनात्मकता नष्ट हो जाती है। अध्यापक में प्रेम और स्वतन्त्रता के भाव होने चाहिए जिससे अध्यापक प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उनकी देखभाल कर सके एवं तब अध्यापक सदैव के लिए सचेत एवं जागरूक रहने वाला सहज मानव होगा। एक अध्यापक को धैर्यवान, सावधान और प्रज्ञा से पूर्ण होना आवश्यक है, जिससे वह बालक की प्रवृत्तियों को समझते हुए उसके वंशानुक्रम तथा पैतृक प्रभाव को ध्यान में रखते हुए उसके प्रति स्नेह का भाव उत्पन्न कर सके। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक का कार्य मात्र विद्यार्थियों को जानकारी देना नहीं है। शिक्षक वह है जो प्रज्ञा एवं सत्य की ओर मार्ग दिखाता है। उनका मानना है कि एक नवीन समाज की रचना के लिए प्रत्येक व्यक्ति को एक सच्चा शिक्षक बनना होगा, यदि एक नवीन सामाजिक व्यवस्था लानी है, तो शिक्षक के रूप में उन व्यक्तियों का स्पष्टतः कोई स्थान नहीं हो सकता जो केवल वेतन कमाने के लिए पढ़ाते हैं। शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन समझना वस्तुतः स्वयं अपने लाभ के लिए विद्यार्थियों का शोषण करने के समान है।

कृष्णमूर्ति बालक के व्यक्तित्व का आदर करते थे, ये उनके ऊपर बाहर से कोई नियम, सिद्धान्त अथवा मूल्य और किसी भी प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक पूर्वाग्रहों को थोपने का विरोध करते थे। वे

विद्यार्थी में ऐसी चेतना विकसित करने पर बल देते थे जो उन्हें सत्य, नियम, सिद्धान्त एवं मूल्यों का चयन करने में सहायक हो। जिद्दू कृष्णमूर्ति शिक्षा में विद्यार्थी को प्रमुख मानते थे। उनके अनुसार विद्यार्थी को शिक्षक का सम्मान करने वाला होना चाहिए। विद्यार्थी में आत्मदृढ़ता का समावेश होना चाहिए। एक विद्यार्थी में शिक्षक के प्रति आदर भाव होना चाहिए क्योंकि इसके अभाव में वह कोई भी ज्ञान ग्रहण नहीं कर पायेगा तथा शून्य ही रह जाएगा। इसी के साथ वह अपने शिक्षकों के अनुभवों से वंचित रह जाएगा तथा किसी भी सत्य को प्राप्त नहीं कर पाएगा। कृष्णमूर्ति जी ने कहा है कि विद्यार्थी को बाल्यावस्था से ही उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए स्वतन्त्र छोड़ देना चाहिए उसे अपने अनुसार किसी बंधन में नहीं जकड़ना चाहिए। धार्मिक विश्वास एवं कर्मकांड के नियम, आशायें, और आकांक्षाएँ वास्तविक कार्य नहीं होते बल्कि ये सभी बंधन होते हैं और यदि विद्यार्थी का विकास उक्त बाधाओं से मुक्त करके होने दिया जाता है तो वह परिपक्व होगा और फिर वह नवीन अनुसंधान कर पाएगा। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार **"विद्यार्थी"** किसी कोमल पौधे की तरह होता है और उसे मार्गदर्शन एवं निर्देशन की आवश्यकता होती है।

उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच को सभी वर्गों तक सुनिश्चित करने के लिए एवं उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षित शिक्षकों को तैयार करने के लिए शिक्षक शिक्षा प्रणाली में बदलाव की महती आवश्यकता है। जिसका प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में करने का प्रयास किया गया है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षक संबंधी विचारों को यदि वर्तमान संदर्भ में क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाए तो

शिक्षक अपना शिक्षण प्रभावपूर्ण रूप में कर सकेगा तथा ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण हो सकेगा जो स्वतंत्र विचार रखता हो। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी यह कहा गया कि अध्यापक की भूमिका है कि वह बच्चों को अभिव्यक्ति के लिए एक सुरक्षित स्थान व अवसर दे और साथ ही निश्चित प्रकार की अन्यःक्रिया स्थापित करे।

जिद्दू कृष्णमूर्ति अध्यापक से यह अपेक्षा रखते हैं कि अध्यापक मात्र अपना शिक्षण कार्य करवाकर अपने कार्य की पूर्ति करने वाला नहीं होना चाहिए बल्कि वह अपने कक्षा के हर बच्चे को इतना गहरे रूप में जाने कि उसे यह ज्ञात हो कि उसका छात्र किस परिस्थिति में किस प्रकार का व्यवहार करेगा, कैसी प्रतिक्रिया करेगा तभी संबंध आत्मीय होंगे।

निष्कर्ष रूप में समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित शिक्षक, शिक्षार्थी एवं उनके सम्बन्धों की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने विद्यार्थी को समग्र अवलोकन शक्ति का विकास करने के साथ उसमें समष्टि के प्रति जागरूकता और समानता का भाव उत्पन्न करने की बात कही।
- विद्यार्थी में एकाग्रता का विकास करने के लिए ध्यान करने की आदत पर उन्होंने बल दिया क्योंकि ध्यान के माध्यम से ही सत्य की अनुभूति शान्तिपूर्ण रूप से हो पाएगी।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने प्रत्येक शिक्षक का यह उत्तरदायित्व बताया है कि छात्र-शिक्षक सम्बन्ध अच्छे करने के लिए यह आवश्यक है कि छात्र-शिक्षक अनुपात कम होना चाहिए ताकि प्रत्येक शिक्षक अपने छात्र पर पूर्ण रूप से ध्यान दे पाये। इसी के साथ

प्रत्येक शिक्षक को छात्र के समय कुछ खाली समय बिताना चाहिए ताकि वह उसकी समस्याओं को सुनकर समाधान खोज सकें।

- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार प्रधानाचार्य किसी विद्यालय का प्रकाश स्तम्भ होता है। अतः प्रधानाचार्य को समन्वित व्यक्तित्व का होना चाहिए। प्रधानाचार्य के अतिरिक्त सभी शिक्षकों को विद्यालय के प्रति अपने आपको उत्तरदायी समझना चाहिए।
- शिक्षकों के पास समान कार्य वितरण की व्यवस्था होनी चाहिए। विद्यालय में ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी एक ही शिक्षक पर बोझ अधिक हो और कोई पूर्णतः कार्यमुक्त हो।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक को उदासीनता का भाव त्याग कर अपने विद्यार्थियों में स्नेह, प्रेम, करूणा और सौहार्द का संचार कर उन्हें उनके 'स्व' से परिचित कराए तभी वह अपने समाज, राष्ट्र और विश्व नागरिकता के अपने उत्तरदायित्व को समझ पाएंगे।
- बालक किसी शिक्षक पर निर्भर न रहकर स्वयं करके सीखे तथा अपना दीपक स्वयं बने और अपने भीतर वह प्रज्ञा जाग्रत करे ताकि वह अनुचित का पुरजोर खुलकर विद्रोह करके समग्र क्रान्ति लाने में सक्षम हो सकें।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार गुरु-शिष्य के मध्य संबंध तभी प्रगाढ़ होते हैं जब विद्यार्थी को भयमुक्त वातावरण प्राप्त हो, तभी विद्यार्थी स्वयं को समझ पाएगा तथा अपने आस-पास के वातावरण को भी।

शोध का सातवाँ उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित अनुशासन का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना' ।

सातवें उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार अधिगम की कला ही अनुशासन है। कृष्णमूर्ति जबरन डाले गये अनुशासन को निरर्थक मानते हैं। सही शिक्षा से ही सच्चे अनुशासन की समझ उत्पन्न होती है, ऐसा तभी होगा जब हममें प्रेम और सृजनात्मक बोध की क्षमता हो। कृष्णमूर्ति के अनुसार जब कोई किसी से प्रेम करता है, तो अनुशासन की आवश्यकता नहीं रह जाती है। प्रेम स्वतः ही सृजनात्मक ज्ञान की क्षमता विकसित करता है। इसलिए वहाँ न तो प्रतिरोध होता है और न संघर्ष। इस प्रकार अनुशासन नियंत्रण का दमन नहीं है। यदि विद्यार्थी दूसरों का ध्यान रखते हुए, अपने शिक्षक को ध्यान से सुनते हैं, समय का पालन करते हैं, नियमित कक्षा में जाते हैं, स्वाध्याय करते हैं, और इतने सक्रिय होते हैं कि प्रत्येक वस्तु का अवलोकन गहन रूप में करते हैं, तो यही अनुशासन है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षण संस्थानों में सीखने के लिए "सुरक्षित और उत्तेजक सीखने के माहौल" को आवश्यक मानती है। कृष्णमूर्ति स्कूलों में गैर-प्रतिस्पर्धी वातावरण बनाए रखने के प्रबल पक्षधर थे क्योंकि हर बच्चा अद्‌वितीय होता है और आवश्यकता इस बात की है कि बच्चे की विशिष्टता को पहचानना और बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष रूप में समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित अनुशासन की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा सिद्धान्त स्वतन्त्रता, स्वनिर्भरता, स्वानुशासन और सृजन की बुनियाद पर निर्मित है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति जी छात्रों पर तथाकथित रूप से थोपे गये अनुशासन के अत्यधिक विरोधी थे। वे छात्र को पूर्ण स्वतन्त्रता देने के पक्षधर थे। उनके अनुसार स्वतन्त्रता से आशय मनमानी करने से नहीं है बल्कि छात्र को समग्र अवलोकन करने की स्वतन्त्रता, जिज्ञासा व्यक्त करने की स्वतन्त्रता, शिक्षक से वार्तालाप एवं सन्देह प्रकट करने की स्वतन्त्रता है और उन्होंने इन्हीं व्यवस्था को अनुशासन माना।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने स्वशासन पर बल दिया है। उनका तर्क है कि व्यवस्था और स्वतन्त्रता से विद्यार्थियों में असन्तोष और अनुशासनहीनता उत्पन्न नहीं होती है। स्वानुशासन का निर्माण स्वयं से ही होता है।

शोध का आठवां उद्देश्य था- 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित मूल्यांकन का समसामयिक सन्दर्भों में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना' ।

आठवें उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं-

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन की प्रक्रिया को अभिव्यक्त करते हैं। उनका मूल्यांकन के सम्बन्ध में दिया गया प्रथम विचार कि - 'विद्यार्थियों को अंक तथा ग्रेड प्रदान करना मानवीय गरिमा को क्षतिग्रस्त करता है',

यह पुष्टि करता है कि विद्यालय में विद्यार्थी का किसी विषयवस्तु के प्रति समझ का मूल्यांकन परीक्षा पर निर्भर नहीं होना चाहिए ना ही विद्यार्थी की बुद्धि पर। उनका यह विश्वास था कि विद्यार्थी की कक्षा के अन्य विद्यार्थी से तुलना करना दयालुता को नजरअंदाज कर नस्लीय भय एवं डर को बढ़ावा देता है। क्योंकि विद्यालय से ही यह डर विद्यार्थी के अन्दर बैठ जाता है, जोकि जीवन के अन्त तक समाप्त नहीं हो पाता है। इसी प्रकार यह महत्वकांक्षा को जन्म देता है, जो जीवन के अन्त तक समाप्त नहीं होती। इसलिए जिद्दू कृष्णमूर्ति परीक्षा को शिक्षा में कोई स्थान नहीं देना चाहते थे। उन्होंने यह सुझाव दिया कि विद्यार्थी की आन्तरिक क्षमता का विकास करने के लिए जीवन में किसी भी व्यक्ति से तुलना को समाप्त करना होगा तभी हम हर विद्यार्थी के व्यक्तित्व की विशिष्टता को स्वीकार कर पाएँगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक गैर-प्रतिस्पर्धी संस्कृति को विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। कृष्णमूर्ति मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली के खिलाफ थे, जो बच्चों को केवल रटने के आधार पर आंकता है। उन्होंने गुणात्मक मूल्यांकन प्रणाली का समर्थन किया क्योंकि यह दैनिक आधार पर किया जाता है और इसमें मात्रात्मक और गैर-मात्रात्मक दोनों पैरामीटर शामिल होते हैं। छात्रों को सृजनात्मक रूप से सोचने के लिए एवं समस्या का उचित समाधान खोजने हेतु जे. कृष्णमूर्ति अनुभवात्मक अधिगम व एकीकृत पाठ्यक्रम को महत्व देते थे। साथ ही जे. कृष्णमूर्ति बच्चों के समग्र विकास हेतु विद्यालयी वातावरण में गैर-प्रतिस्पर्धी संस्कृति को बढ़ावा

देने के लिए प्रतिबद्ध थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन्हीं संदर्भों में जे. कृष्णमूर्ति के विचारों को स्वीकार करती है।

निष्कर्षों के रूप में समसामयिक संदर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में निहित मूल्यांकन की उपरोक्त अवधारणा अतिआवश्यक प्रतीत होती है, क्योंकि-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली को निरर्थक मानते हुए गुणात्मक मूल्यांकन प्रणाली को अपनाने की बात कही है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति ने परम्परागत मूल्यांकन प्रणाली को प्रतिस्पर्धा पैदा करने वाली प्रणाली माना है, जबकि कृष्णमूर्ति जी विद्यालय में गैर प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के पक्षधर थे।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति का कहना था कि मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली विद्यार्थियों में भय और महत्वकांक्षा को उत्पन्न करती है। कृष्णमूर्ति जी विद्यार्थी को किसी भी प्रकार का ग्रेड तथा अंक देने के खिलाफ थे।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार अध्यापक को सतत मूल्यांकन के द्वारा अपने विद्यार्थियों की प्रगति का निरन्तर अवलोकन करते रहना चाहिए।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि विद्यालय में किसी भी विद्यार्थी की किसी अन्य विद्यार्थी या व्यक्ति के साथ तुलना नहीं होनी चाहिए।

1.11.0 शैक्षिक निहितार्थ:

प्रस्तुत शोध “समसामयिक सन्दर्भों में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन” शीर्षक पर किया गया दार्शनिक शोध है। शोध के निष्कर्षों से विदित होता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन समसामयिक संदर्भों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु उनके व्यक्तित्व के संज्ञानात्मक पक्ष, क्रियात्मक पक्ष व भावनात्मक पक्ष के विकास में अत्यंत सहायक हो सकता है। जिससे कि विद्यार्थियों को चेतनायुक्त, सद्भावना से परिपूर्ण, सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त, वैज्ञानिक बुद्धि एवं आध्यात्मिक रूप से विकसित किया जा सके। व्यावसायिक कुशलताओं को प्राप्त कर जीवन के सभी उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सके। सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का विकास कर सामाजिक व राष्ट्रीय कर्तव्यों के निर्वहन हेतु तैयार किया जा सके।

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु उचित पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियों, शिक्षा में विद्यार्थी की भूमिका, शिक्षक की भूमिका, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, विद्यालय परिवेश, विद्यालय में अनुशासन, शिक्षा में मूल्यांकन इत्यादि शिक्षा से संबन्धित सभी आवश्यक संप्रत्ययों पर व्यावहारिक रूप से अपने विचार स्पष्ट करता हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्तमान शोध प्रबन्ध का महत्वपूर्ण उपयोग है। प्रस्तुत शोध का उपयोग कर विद्यार्थी, शिक्षक, विद्यालय प्रशासक, पाठ्यक्रम निर्माता, शैक्षिक चिंतक आदि मार्गदर्शन ले सकते हैं, अतः इनसे संबधित शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं -

1. विद्यार्थियों हेतु -

जिद्दू कृष्णमूर्ति शिक्षा प्रक्रिया में विद्यार्थी को प्रमुख मानते थे। वे विद्यार्थी के व्यक्तित्व का आदर करते थे, उनके ऊपर बाहर से कोई नियम, सिद्धान्त अथवा मूल्य और किसी भी प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक पूर्वाग्रहों को थोपने का विरोध करते थे। वे विद्यार्थी में ऐसी चेतना विकसित करने पर बल देते थे जो उन्हें सत्य, नियम, सिद्धान्त एवं मूल्यों का चयन करने में सहायक हो। उनके अनुसार विद्यार्थी को शिक्षक का सम्मान करने वाला होना चाहिए। धार्मिक विश्वास एवं कर्मकांड के नियम, आशायें, और आकांक्षाएँ वास्तविक कार्य नहीं होते बल्कि ये सभी बंधन होते हैं और यदि विद्यार्थी का विकास उक्त बाधाओं से मुक्त करके होने दिया जाता है तो वह परिपक्व होगा और फिर वह नवीन अनुसंधान कर पाएगा। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार "विद्यार्थी" किसी कोमल पौधे की तरह होता है और उसे मार्गदर्शन एवं निर्देशन की आवश्यकता होती है। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के विद्यार्थी संबंधी शैक्षिक विचार विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है।

2. शिक्षकों हेतु -

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया में एक अध्यापक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। इसमें अध्यापक को किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर उनका मार्गदर्शन नहीं करना चाहिए क्योंकि दूसरे के द्वारा लक्ष्यों का निर्धारण होने पर सृजनात्मकता नष्ट हो जाती है। अध्यापक में प्रेम और स्वतन्त्रता के भाव होने चाहिए जिससे अध्यापक प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को ध्यान में रखते

हुए उनकी देखभाल कर सके। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक को उदासीनता का भाव त्याग कर अपने विद्यार्थियों में स्नेह, प्रेम, करूणा और सौहार्द का संचार कर उन्हें उनके 'स्व' से परिचित कराए तभी वह अपने समाज, राष्ट्र और विश्व नागरिकता के अपने उत्तरदायित्व को समझ पाएंगे। इसके लिए अध्यापक को सदैव सचेत एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है। एक अध्यापक को धैर्यवान, सावधान और प्रज्ञा से पूर्ण होना आवश्यक है, जिससे वह बालक की प्रवृत्तियों को समझते हुए उसके वंशानुक्रम तथा पैतृक प्रभाव को ध्यान में रखते हुए उसके प्रति स्नेह का भाव उत्पन्न कर सके। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षक संबंधी शैक्षिक विचार शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है।

3. विद्यालय प्रशासकों हेतु -

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए। विद्यालय में बच्चों को पूर्णरूप से शारीरिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्राप्त होनी चाहिए जिससे बच्चे निर्भय होकर अध्ययन कर सकें। विद्यालय का वातावरण जाति, समाज, सम्प्रदाय, राष्ट्र की सीमाओं की कैद नहीं होना चाहिए, विद्यालय में अनिवार्य रूप से मूल्यपरक शिक्षा की उचित व्यवस्था हो, विविधतापूर्ण पाठ्यचर्या के लागू किये जाने साथ ही विद्यालय ऐसा हो जहाँ जीवन की शिक्षा दी जा सके। विद्यार्थियों की शिक्षा हेतु अधिक मजेदार, रचनात्मक, सहयोगी और खोजपूर्ण गतिविधियाँ समय-समय पर आयोजित कराई जाए। विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु विद्यालयी वातावरण में गैर-प्रतिस्पर्धी संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए जिससे उनमें

परीक्षा का तनाव कम हो। विद्यालय में विद्यार्थियों को भयमुक्त व तनावमुक्त वातावरण प्रदान किए जाने व उनमें सृजनात्मकता का विकास करने हेतु उचित वातावरण, पर्याप्त सुविधाएं व संसाधन प्रदान करने में विद्यालय प्रशासकों की भूमिका सबसे अहम होती है। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार विद्यालय प्रशासकों के लिए भी उपयोगी है।

4. पाठ्यक्रम निर्माताओं हेतु-

कृष्णमूर्ति ने पाठयक्रम को एकीकृत करने पर जोर दिया। उनके अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो सभी व्यक्तियों के लिए लाभदायक हो इसलिए उन्होंने सन्तुलित पाठ्यक्रम पर बल दिया, क्योंकि वे बालक के सन्तुलित विकास की बात करते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी छात्रों को सम्रग एवं बहुविषयक शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान रखा गया है ताकि छात्रों का समग्र विकास किया जा सके। साथ ही बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प प्रदान किया जाएगा। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के पाठ्यक्रम संबंधी शैक्षिक विचार पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए भी उपयोगी है।

5. शैक्षिक चिंतकों हेतु -

प्रत्येक काल में शिक्षा अपने नवीन आयामों को प्राप्त करने हेतु सदैव दर्शन पर आश्रित रहती हैं। शिक्षा दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों एवं तत्वों के उचित समावेशन से ही शिक्षा द्वारा व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की समस्याओं के उपयुक्त समाधान प्राप्त किए जाते रहे हैं। कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार व्यक्ति को सामाजिक परिवेश में

समायोजन करने में सहायता प्रदान करने, सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण करने, समाज में वैमनस्य को दूर करने, भेदभाव को समाप्त करने, सामाजिक एकरूपता की स्थापना करने व सामाजिक-सांस्कृतिक व राष्ट्रीय मूल्यों के उत्थान के पक्षधर दिखाई देते हैं। जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन सम्बन्धी विचार सम्पूर्ण मानव जाति की सर्वांगीण उन्नति के सन्दर्भ में अनुकरणीय हैं। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने शिक्षा को केवल मनुष्य को संस्कारयुक्त करने में ही उपयोगी नहीं माना है अपितु जीवन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझने में भी उपयोगी माना है। ये विचार समसामयिक संदर्भों में शिक्षा के लिए उपयुक्त परिलक्षित होते हैं। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार शैक्षिक चिंतकों के लिए भी उपयोगी है।

1.12.0 भविष्य में शोध हेतु सुझाव :

प्रस्तुत शोध पी-एच.डी. की अवधि में किया गया एक विस्तृत प्रयत्न है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि सम्बंधित विषय पर अन्य शोध किये जायें। शोधकर्ता ने जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन समसामयिक सन्दर्भों में किया है। प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पन्न करते हुए शोधकर्ता द्वारा यह अनुभव किया गया कि जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक व शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता पूर्व की अपेक्षा आज वर्तमान समय में अधिक हो गयी है। अतः प्रस्तुत शोध के आधार पर भविष्य में शोध हेतु सुझाव निम्नांकित हैं-

- जिद्दू कृष्णमूर्ति द्वारा संचालित विद्यालयों की कार्यपद्धति का वर्तमान विद्यालयों की कार्य पद्धति के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का वर्तमान भारतीय समाज की समस्याओं एवं शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति की विचारधारा का बालक के सन्दर्भ में प्रकृतिवादी, प्रयोजनवादी, यथार्थवादी विचारधारा जैसे आयामों को लेकर अध्ययन किए जा सकते हैं।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों में निहित नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का वर्तमान समाज के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति द्वारा भारत एवं विदेशों में स्थापित विद्यालयों उनके शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक, छात्र, शिक्षक-छात्र सम्बन्ध, विद्यालय, अनुशासन, मूल्यांकन आदि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के विचारों का जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन तथा विश्व-शान्ति के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन पर भारतीय नास्तिक एवं आस्तिक दर्शनों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति एवं थियोसोफिकल सोसाइटी को लेकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

- जिद्दू कृष्णमूर्ति जी के बाल मनोविज्ञान के सम्बन्ध में दिए गए विचारों का वर्तमान में शैक्षिक प्रासंगिकता पर शोध किये जा सकते हैं।
- जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।